ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद 1/164/46
एक ही ईश्वर को विद्वान् लोग अनेक नामों से कहते हैं, पुकारते हैं।
The wise men invoke the one God by different names.

वर्ष 39, अंक 15 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 फरवरी, 2016 से रविवार 21 फरवरी, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

क्या जे.एन.यू. में भी हो ऑपरेशन ब्लू स्टार?

आज पाकिस्तान में उग्रवाद चरम स्थिति पर है; उसका कारण मदरसों में उग्रवाद का प्रवेश जेहाद का खुले आम प्रशिक्षण जिस वजह से वहां के शिक्षण संस्थान राजनीति में दखल देते हुए उग्रवाद के अड्डे बन गये। क्या भारत के तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दल भारत में अराजक तत्त्वों को स्वीकार करेंगे?

'अलग खालिस्तान' की मांग के लिए हुए विद्रोह से पवित्र स्वर्ण मंदिर पर हमला हुआ था, कारण भारतीय संविधान के अनुच्छेद (1) को चुनौती दी गई थी क्योंकि अनुच्छेद (1) कहता है कि भारत राज्यों का एक संघ होगा. किसी भी राज्य को संघ से अलग होने का अधिकार नहीं है. जिस तरह की व्यवस्था अमेरिका में है, वैसी ही भारत ने अपनाई है. मतलब साफ है कि खालिस्तान रूपी स्वतंत्र राज्य की मांग नाजायज थी, जैसे आज कश्मीर के अलगाववादी नेताओं की है। किन्तु खालिस्तान की मांग करने वाले चरमपंथी किसी भी सूरत में देश के संविधान को मानने से इंकार कर रहे थे। देश में पहली बार किसी मंदिर को आतंकियों के चंगुल से छुड़ाने के लिए सेना हथियारबंद होकर पहुंची थी जिसे ऑपरेशन ब्लू स्टार नाम दिया गया था और इतिहास ने हमेशा-हमेशा के लिए यहां करवट बदली थी। मंदिर तो आजाद हो गया था, आतंकी भी मारे गये थे लेकिन साथ ही गहरे जख्म देकर आज एक प्रश्न खड़ा कर गया कि जब देश के संविधान की रक्षा के लिए सिखों की आस्था पर हमला हो सकता है! जेएनयू में लड़कर लेकर रहेंगे आजादी, भारत की बर्बादी तक जंग जारी रखने वालों की क्या गिरफ्तारी भी नहीं हो सकती? खालिस्तानी तो सिर्फ अलग देश मांग रहे थे, यह लोग तो भारत की बर्बादी तक जंग जारी रखने की बात कर रहे हैं।

अफजल गुरु की फांसी की बरसी मना रहे छात्रों के गुट ने भारत विरोधी नारे लगाए।

जरूरत इस बात की है कि धार्मिक स्थलों, शिक्षण संस्थानों की कड़ी से कड़ी सुरक्षा की जाए ताकि कोई उग्रवादी उनमें प्रवेश कर इनकी पवित्रता का हनन न कर पाए, सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छी शिक्षा और अनुभव के फलस्वरूप तैयार किए जाने वाले शिक्षण संस्थानों की बेहतर सुविधाएं मिलने से विद्यार्थियों के भविष्य की नींव मजबूत होती है।

स्वर्ण मंदिर में ऐसी स्थितियां पैदा हो गई थी और वहां पर भी गोलियां चलानी पड़ी। अकाल तख्त को नुकसान पहुंचा था। स्वर्ण मंदिर में भी गोलियाँ चलीं। कई सदियों में पहली बार वहाँ से पाठ छह, सात और आठ जून को नहीं हो पाया। ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सिख पुस्तकालय भी जल गया। भारत सरकार के श्वेतपत्र के अनुसार 83 सैनिक मारे गए और 249 घायल हुए। 493 चरमपंथी या आम नागरिक मारे गए, 86 घायल हुए और 1592 गिरफ्तार किये गये। लेकिन ये आंकड़े विवादित माने जाते हैं। मगर सवाल यह है कि क्या धार्मिक स्थलों और शैक्षिक संस्थानों की आड़ में उग्रवाद जैसी गतिविधियों को सहन किया जा सकता है? निश्चित रूप से नहीं? क्योंकि अगर ऐसा किया गया तो धार्मिक और शैक्षिक स्थल उग्रवादियों के गढ़ बन जाएंगे और देश भर में अराजकता व अशांति का माहौल पैदा हो जाएगा। आज पाकिस्तान में उग्रवाद चरम स्थिति पर है; उसका कारण मदरसों में उग्रवाद का प्रवेश जेहाद का खुले आम प्रशिक्षण जिस वजह से वहां के शिक्षण

...शेष पेज 5 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा समस्त आर्यजनों एवं आर्य समाजों से अपील

धूमधाम से मनायें महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसार-प्रचार के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस को हमें बड़ी भव्यता और उत्साह के साथ मनाना चाहिए। सभी आर्यजन और आर्य समाजों से विशेष अपील है कि आगामी 4 मार्च 2016 को महर्षि के जन्मदिवस को कुछ इस प्रकार आयोजित करें:-

1. समस्त आर्य संस्थाओं एवं आर्यों के घर पर ओ३म का झंडा लहराना चाहिए।
2. प्रत्येक आर्य समाज में यज्ञों को विधि-विधान से करना चाहिए। साथ ही प्रत्येक आर्य समाजी के घर में भी यज्ञ होना चाहिए।
3. स्वामी जी द्वारा किए गए धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों पर स्थानीय समाचार पत्रों में लेख प्रकाशित कराने चाहिए। यदि संभव हो तो इस संबंध में विज्ञापन भी प्रकाशित कराना चाहिए। पूरी रात प्रकाश उत्सव की भांति घरों में रोशनी करनी चाहिए और जन-जन तक स्वामी जी के जन्मदिन का ज्ञान कराना चाहिए।
4. स्वामी जी के जन्मदिवस पर उनके बताए सामाजिक कार्यों को भव्यता के साथ किया जाना चाहिए। इस अवसर पर निम्न स्तर के वर्गों के लिए सामूहिक भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए तथा स्वयं भी उनके साथ भोजन करना चाहिए।
5. आर्य समाजें कोई न कोई परोपकार के कार्य इस दिन अवश्य करें। जैसे रक्त दान शिविर, मैडिकल चैकअप, सामूहिक विवाह, आंखों का ऑपरेशन इत्यादि।

...शेष पेज 4 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के आगामी कार्यक्रम

ऋषि बोधोत्सव
दिनांक 7 मार्च 2016,
प्रातः 8 से सायं 4 बजे
स्थान- रामलीला मैदान, दिल्ली

नव संस्येष्टि (होली)
दिनांक 23 मार्च 2016, सायं 3 बजे
स्थान- रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

आर्य समाज स्थापना दिवस
दिनांक : 8 अप्रैल 2016, प्रातः 8 बजे
स्थान- फिक्की सभागार, 12 खम्बा रोड, निकट मण्डी हाउस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली

समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि उपरोक्त तिथियों एवं समय में अपना कोई कार्यक्रम आयोजित न करें तथा अधिकाधिक संख्या में सभी कार्यक्रमों में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

स्वाध्याय

आत्माग्नि का प्रदीपन

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः।
अग्निमीधे विविस्वभिः।।
-ऋ. 8/102/22; साम. पू. 1/1/2/1
ऋषि :- पावको बार्हस्पत्यः।। देवता-अग्निः।। छन्दः-निचृद्गायत्री।।

विनय- मैं जो प्रतिदिन आग जलाकर अग्निहोत्र करता हूं उससे क्या हुआ, यदि इस अग्नि-दीपन से मेरे अन्दर की आत्म-ज्योति न जग सकी। यदि मेरे प्रतिदिन अग्निहोत्र करते रहने पर भी मेरे जीवन में कुछ भेद न आया, मेरा व्यवहार-आचरण वैसा-का-वैसा रहा, न मुझमें सद्बुद्धि ही जागृत् हुई और न मैं सत्कर्मों में प्रेरित हुआ, तो मेरा यह सब अग्निचर्या करना व्यर्थ है। सचमुच हरेक बाह्य-यज्ञ अन्दर के यज्ञ के लिए है। बाहर की अग्नि इसलिए प्रदीप्त की जाती है कि उस द्वारा एक दिन अन्दर की आत्मग्नि प्रदीप्त हो जाए। यह आत्माग्नि मन द्वारा प्रदीप्त की जाती है, इसीलिए कहा गया है कि बाहर के द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा अन्दर का मानसिक यज्ञ हजार गुणा श्रेष्ठ होता है, अतः मनुष्य को चाहिए कि मन द्वारा अपनी आन्तर अग्नि को जलाये, आत्माग्नि को प्रदीप्त करें और इस प्रकार 'धी' को, सद्बुद्धि को प्राप्त कर ले तथा सत्कर्म में प्रेरित होता हुआ आत्मकल्याण को पा जाए। जो मनुष्य मनन करते हैं, अर्थात् आत्मनिरीक्षण, आत्मचिन्तन, विचार और भावना करते हैं, जाप करते हैं तथा धारणा, ध्यान, समाधि लगाते हैं, वे इन सब मानसिक प्रक्रियाओं द्वारा आत्मज्योति को जगा लेते हैं और उन्हें सत्यबुद्धि, ज्ञानप्रकाश, सदा ठीक कर्म में ही प्रवृत्त कराने वाली समझ मिल जाती है, अतः आज से मैं भी इस अग्नि को प्रदीप्त करूंगा, विवस्वतों द्वारा-तमोनिवारक ज्ञानकिरणों द्वारा इस अग्नि को प्रज्ज्वलित करना प्रारम्भ करूंगा। जैसे सूर्यकिरणों द्वारा संसार की सब प्रकार की ज्योतियां प्रदीप्त और प्रकाशित होती हैं, वैसे उस ज्ञान-सूर्य-सविता-परम आत्मा की किरणों द्वारा मैं अपनी आत्माग्नि को प्रदीप्त करूंगा। सत्यज्ञान देन वाले सब वेदादि ग्रन्थ, सत्य का उपदेश देने वाले सब गुरु, आचार्य, मेरे अन्दर मन की सब सात्विक वृत्तियां-ये सब उसी ज्ञान-सूर्य की भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में फैली हुई किरणें हैं, विवस्वत् हैं। मैं इनके द्वारा आज से अपनी आत्माग्नि को प्रतिदिन प्रदीप्त करता जाऊंगा। यही मेरे उद्धार का सीधा, साफ और चौड़ा मार्ग है।

शब्दार्थः- मनसा- मन द्वारा अग्निम्-अग्नि को, आत्मा को इन्धानः-प्रज्वलित करता हुआ मर्त्यः- मनुष्य धियम्-सद्बुद्धि को और सत्कर्म को सचेत-प्राप्त करे। मैं विवस्वभिः-तम को हटाने वाली ज्ञान-किरणों द्वारा अग्निम्-इस अग्नि को ईधे-प्रदीप्त करता हूं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

कहीं ये हाफिज का अड्डा तो नहीं?

ह मारी कलम लिखे भी तो क्या लिखे? आखिर इस से पहले भी बहुत से लोगों ने बहुत कुछ इस सन्दर्भ में लिखा होगा और अगर लिखने से ही कुछ होता तो पिछले कुछ दिनों से भारत की राजनीति कब्रों, लाशों में लिपट कर न रह जाती। जिन्दा लोग, उनकी मूलभूत सुविधाओं, उनकी जरूरतों को नजरअंदाज कर मुर्दो को मुद्दा बनाया जा रहा है। दादरी, हैदराबाद के बाद अब 10 फरवरी को जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी (जेएनयू) में मंगलवार को उस वक्त भारी हंगामा हो गया जब वामपंथी छात्रों के समूह ने संसद हमले के दोषी अफजल गुरू और जम्मू-कश्मीर लिब्रेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) के को-फाउंडर मकबूल भट की याद में एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस आयोजन के बाद यहां हालात इतने बिगड़ गए कि प्रशासन को पुलिस बुलाने की नौबत आ गई। विवाद की वजह यह रही कि इस कार्यक्रम में अफजल गुरु को शहीद का दर्जा दिया गया। नारे लगाये जा रहे थे लड़कर लेंगे आजादी, कश्मीर में लेंगे आजादी, हर घर से अफजल निकलेगा, तुम कितने अफजल मारोगे और खुले आम पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाये जा रहे थे जिसका एबीवीपी के छात्रों ने भारी विरोध किया। गौर तलब है

इसी तरह के नारे पाकिस्तान के मदरसों में भी लगाये जाते हैं। अफजल गुरू को 9 फरवरी 2013 को फांसी दी गई थी, वहीं मकबूल भट को 11 फरवरी 1984 को फांसी दी गई थी। आखिर कौन हैं यह लोग? जो आतंक को सर्वोपरि बताकर राजनीति कर रहे हैं। कभी मस्जिद को शहीद कहते हैं, तो कभी आतंकियों को शहीद बताते हैं। जब इनकी नजर में मानवता के ये हत्यारे शहीद होते हैं तो फिर इनकी नजर में वे कौन होते है जो देश की सीमा रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर देते हैं? मुस्लिम देशों में रोजाना मस्जिदों में धमाके होते हैं उन मस्जिदों के लिए शहादत के क्या मापदंड है? यह शहादत की अजान सिर्फ भारत में ही गुंजायमान रहती है? आखिर राजनीति ऐसी कौन सी मजबूरी है जो इन देशद्रोहियों को पकड़ नहीं सकती। इन राष्ट्र विभाजकों पर कानून को अपना काम क्यों नहीं करने दिया जाता? क्या भारत में आतंक को मान्यता मिल गयी जो इस तरह के आतंक के अड्डे खुले आम चल रहे है। हाफिज सईद के जेहादी ठिकानों और इन कॉलिजो के कैम्पस में अंतर क्या रह गया? आखिर ऐसा क्या लिख दूं कि ये सब खत्म हो जाये? कुछ लोग इतनी छोटी सी बात को क्यों नहीं समझ पाते कि आज आस्तीन में पल रहे सांप कल के सुनहरे भविष्य की मासूम किलकारियों को जरुर डसेंगे।

आज वोट बैंक की राजनीति को देखकर लगता है कि देश के अन्दर आतंकवाद लाइलाज समस्या के रूप में खड़ा कर दिया गया है। हर बार आतंकवादी आते हैं और अपने नापाक इरादों को बेहद सफाई और चालाकी से अंजाम देकर भाग खड़े होते हैं या मारे जाते हैं। जो मारे जाते हैं, नेता लोग उनकी लाश लेकर उन्हें शहीद बता कर मजहब के नाम पर वोट बटोरते हैं। क्या हमारी खुफिया एजेंसियां और सुरक्षातंत्र का बार-बार माखौल सिर्फ इसलिए उड़ता हैं कि आतंक को मदद देश के अन्दर से ही मिल रही है? हर बार आतंकी हमले देश की आम जनता के मन मस्तिष्क को झिंझोड़ कर रख देते हैं। मासूमों को अपनी जान गवानी पड़ती है।

पठानकोट हमले को लेकर एनआईए की जांच-पड़ताल जारी है। एनआईए को छानबीन में कई ऐसी चीजें मिली हैं जिनके हमले से संबंध की जांच की जा रही है। कठुआ और सांबा में हुए आतंकी हमलों में भी अफजल गुरु शहीद लिखे परचे मिले थे। मजारे शरीफ की जांच में भी आतंकियों के पास ऐसी चिट मिली थी। बताया जा रहा है कि अफजल की मौत के बाद जैश ने अफजल गुरु स्क्वाड बनाया है। अफजल के नाम पर नौजवानों को बहकाया जा रहा है। कम से कम 60 लड़कों को फिदाईन ट्रेनिंग दी गई है। संकट यह है कि आतंक का यह खेल सीमा पार से जारी है और विडम्बना यह है कि इसको मदद अन्दर से मिल रही है अभी पिछले दिनों राष्ट्रपति जी ने अपने एक भाषण में राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा था हमें हिंसा, असहिष्णुता और अविवेकपूर्ण ताकतों से स्वयं की रक्षा करनी होगी। आतंकवाद उन्मादी उद्देश्यों से प्रेरित है, नफरत की अथाह गहराइयों से संचालित है, यह उन कठपुतलीबाजों द्वारा भड़काया जाता है जो निर्दोष लोगों के सामूहिक संहार के जरिए विध्वंस में लगे हुए हैं। यह बिना किसी सिद्धांत की लड़ाई है। यह एक कैंसर है जिसका इलाज तीखी छुरी से करना होगा। हमारा प्रश्न है कि वह तीखी छुरी कब चलेगी जब तक तो यह लोग इस देश में हजारो अजमल कसाब, अफजल गुरु तैयार कर देंगे? घटना के तीन दिन बीत जाने के बाद भी इन राष्ट्रद्रोहियों पर नकेल क्यों नही कसी गयी? **-सम्पादक**

प्रेरक प्रसंग

वे सूचना मिलते ही पहुंच जाते थे

आर्य समाज की प्रथम पीढ़ी के नेताओं तथा विद्वानों में श्री पंडित सीतारामजी शास्त्री कविरंजन रावलपिण्डी का नाम उल्लेखनीय है। आप पंडित गुरुदत्तजी विद्यार्थी के साथी- संगियों में से एक थे। अष्टाध्यायी के बड़े पंडित थे। आपने वर्षों आर्य समाज के उपदेशक के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में कार्य किया। फिर स्वतंत्र काम करने का विचार आया तो कलकत्ता चले गये। वहां भारत प्रसिद्ध वैद्य कविराज विजय रत्नसेन के चरणों में बैठकर कविरंजन की उपाधि प्राप्त करके पहले अमृतसर फिर रावलपिण्डी में औषधालय खोलकर बड़ा नाम कमाया।

आप वेद, शास्त्र, ब्राह्मणग्रन्थों के बड़े मर्मज्ञ विद्वान थे। अष्टाध्यायी के बड़े प्रचारक थे। यदि कोई कहता कि पढ़ना-पढ़ाना अति कठिन है तो उसकी पूरी बात सुनकर उसका ऐसा युक्तियुक्त उत्तर देते कि सुनने वाला सन्तुष्ट हो जाता। कविराज जी की कृपा से ही डॉक्टर केशवदेवजी शास्त्री बन पाये। आपकी प्रेरणा से आर्य समाज को और भी कई संस्कृतज्ञ प्राप्त हुए। आपने कलकत्ता में अध्ययन करते हुए, वहां भी आर्य समाज की धूम मचा दी। आपका वहां ब्राह्मसमाज के पंडितों से तथा नेताओं से गहरा सम्पर्क रहा।

एक समय ऐसा आया कि सारा ब्राह्मसमाज आर्य समाज में मिलने की सोचने लगा। फिर कोई विघ्न पड़ गया। ब्राह्मसमाजियों में आर्य समाज में विलीन होने का विचार पैदा हुआ तो इसका कारण मुख्यरूप से कविराज सीतारामजी के प्रयास थे। यह सारी कहानी हम कभी इतिहास प्रेमियों के सामने रखेंगे। सब तथ्य हमने एक लेख में पढ़े थे। वह लेख खोजकर फिर विस्तार से इस विषय पर लिखा जाएगा।

कविराज ने अपनी विद्वता तथा अपनी वैद्यक से आर्य समाज को बहुत लाभान्वित किया। उन दिनों आर्य समाज में संस्कृतज्ञ बहुत कम थे। अमृतसर में यह देखा गया कि जब कभी किसी संस्कार में या किसी समारोह में कविराज को बुलाया गया तो आप एकदम सब कार्य छोड़कर अपनी आर्थिक हानि की चिन्ता न करते हुए वहां पहुंच जाते। बस, उन्हें आर्य समाज की सूचना मिलनी चाहिए। वे शरीर से स्वस्थ थे। जीवन बड़ा नियमबद्ध था। स्वावध्याय तथा सन्ध्या में प्रमाद करने का प्रश्न ही न था।

वे मास्टर आत्माराम अमृतसरी के अभिन्न मित्र थे। वैसे शास्त्री जी की मित्र-मंडली बहुत बड़ी थी। उन्हें मित्र बनाने की कला आती थी।

साभार- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा लिखित पुस्तक तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्य समाज के कर्मयोगी संत आचार्य बलदेव जी महाराज

यह भारत भूमि प्राचीन काल से ही ऋषि- मुनियों- तपस्वियों, साधु- सन्तो, वीरों, वीरांगनाओं, पुण्यात्माओं, विद्वानों, दार्शनिकों, चित्तकों, परोपकारियों, समाज सुधारकों, ज्ञानियों, सदाचारियों, राष्ट्र-भक्तों, धार्मिकों, गौ भक्तों एवं ईश प्रक्तों की भूमि रही है। समय-समय पर भारत की पुनीत वसुन्धरा पर अनेक महापुरुष जन्म लेकर अपने सदुपदेशों के द्वारा भटके हुए लोगों को एक नूतन जीवन देते रहे। चाहे वह स्वामी दयानन्द हों चाहे वह स्वामी श्रद्धानन्द हों, चाहे स्वामी स्वतंत्रानन्द हों, चाहे स्वामी सर्वानन्द हों, चाहे स्वामी ओमानन्द हों, चाहे स्वामी विवेकानन्द हों, चाहे स्वामी त्यागानन्द हों चाहे स्वामी सर्वदानन्द एवं दर्शनानन्द हों। इस प्रकार अनेक धर्मवीरों, राष्ट्र भक्तों एवं वीरांगनाओं ने भी अपनी जान की परवाह न कर धर्म एवं राष्ट्र की रक्षार्थ अपने को बलिदान कर दिया। जैसे पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त, लाला लाजपतराय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, वीर भगत सिंह, राम प्रसाद विस्मिल, राजेन्द्र लहरी, खुदीराम बोस, चन्द्र शेखर आजाद आदि अनेक वीरों ने भी धर्म एवं राष्ट्र की रक्षार्थ अपने को कुर्बान कर दिया। इसी श्रृंखला में शिरोमणि संत आचार्य बलदेव जी का नाम अग्रणी है। आज कौन नहीं जानता है कि आचार्य बलदेव जी का शिष्य स्वामी रामदेव सम्पूर्ण विश्व में वैदिक रूपी पताका फहरा रहे हैं। यदि स्वामी दयानन्द को प्रज्ञाचक्षु ब्रह्मऋषि स्वामी विरजानन्द दण्डी न मिले होते तो आज आर्य समाज को कौन जानता? यदि स्वामी रामदेव को आचार्य बलदेव जी न मिले होते तो आज स्वामी रामदेव को कौन जानता? जिस प्रकार स्वामी विरजानन्द ने अपने शिष्य स्वामी दयानन्द को वैदिक शिक्षा देकर उन्हें एक महान सुधारक एवं वेदों का अद्वितीय विद्वान् बनाया। उसी प्रकार आचार्य बलदेव जी ने भी स्वामी विरजानन्द बनकर स्वामी रामदेव को विद्वान् एवं योगगुरु बनाया। यदि हम आचार्य बलदेव जी को द्वितीय स्वामी विरजानन्द माने तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है। वास्तव में यह सत्य है कि आचार्य बलदेव जी द्वितीय विरजानन्द थे जिन्होंने अपने वैदिक धर्म की रक्षा एवं वेदों की रक्षार्थ स्वामी रामदेव जैसे अनेक शिष्यों को तैयार कर समाज को समर्पित किया।

आचार्य बलदेव जी का जन्म 25 अक्टूबर सन् 1932 ई, को हरियाणा प्रान्त के सोनीपत जिले के सरगथल नामक गांव में गूगन सिंह के घर हुआ। बचपन से ही उनका जीवन सादगी एवं उच्च विचारों से परिपूर्ण था। उन्होंने जाट कॉलेज रोहतक से एस.एस. सी. तक की शिक्षा प्राप्त की। तदुपरान्त स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के सानिध्य में रहकर सन! 1962-1971 तक गुरुकुल झज्जर में रहते हुए अष्टाध्यायी, प्राचीन व्याकरण महाभाष्य, दर्शनों एवं वेदों का सांगोपागं, अध्ययन करते हुए अपने को एक अच्छा विद्वान बनाने में समर्थ हुए तथा बाद में 1971 से 2000 तक गुरुकुल कालवा में रहकर श्रद्धापूर्वक कार्य एवं अध्यापन कार्य करते हुए अनेक ब्रह्मचारियों को वेदों एवं व्याकरण का विद्वान् बनाया। जैसे-आचार्य ऋषिपाल, आचार्य स्वदेश, आचार्य महीपाल, आचार्य अर्जुनदेव आदि।

आचार्य बलदेव जी आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक के कई बाद प्रधान पद पर रहे और मृत्युपर्यन्त तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान पद को भी सुशोभित किया।

आचार्य बलदेव जी आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासियों में अद्वितीय थे। आचार्य जी वेदों, व्याकरण, महाभाष्य के अध्ययन करने के पश्चात् अपना सम्पूर्ण जीवन वेदों की रक्षार्थ आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए उन्हें कभी भूखे भी रहना पड़ता था तो वह रह जाते थे। वह हमेशा कहा करते थे कि जिस स्वामी दयानन्द ने अपना घर परिवार एवं गांव छोड़कर वेदों की रक्षा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। ऐसे महान् संन्यासी के द्वारा स्थापित आर्य समाज की रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। यदि हम लोग ऐसा नहीं करते हैं तो हम धर्म विरोधी हैं।

स्वामी दयान्नद की तरह आचार्य बलदेव जी ने भी अपना सम्पूर्ण परिवार, घर जमीन आदि सभी को त्यागकर अपने जीवन को आर्य समाज की रक्षा में लगा दिया और सभी आर्य जनों से कहा कि आर्य समाज हमारी मां है। इसकी रक्षा करना हमारा परम दायित्व है।

आचार्य बलदेव जी गौ भक्त थे। उन्होंने गौओं की रक्षा पर विशेष बल दिया। उनकी रक्षा के लिये आचार्य गौ रक्षा आंदोलन भी चलाया और उनके समक्ष सरकार को झुकना पड़ा। वह सबसे कहा करते थे कि जो मनुष्य गौओं की रक्षा नहीं करता है उसे संसार में रहने का कोई अधिकार नहीं। गौ माता हमारी संस्कृति की पहचान है। शास्त्रों में वर्णित है कि जो व्यक्ति गौओं की रक्षा नहीं करते हैं और अपने स्वार्थ सिद्धि करने के लिये गौओं की हत्या कर उनके मांस से अपनी भूख मिटाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को शीशे की गोलियों से उड़ा देना चाहिए अर्थात् मार देना चाहिये। जैसाकि वेदों में वर्णित है।

आचार्य जी का सम्पूर्ण जीवन वेदानुकूल था। वह प्रातः चार बजे उठकर पहले ईश का ध्यान करते थे। तदुपरान्त दैनिक दिनचर्या से निवृत्त होने के पश्चात् स्नानादि कर संध्या, यज्ञ, हवन आदि करते थे। तत्पश्चात् वेदों का स्वाध्याय करना उनका नित्य का कार्य था। वह सुबह शाम कम से कम दो घण्टे अवश्य ही घूमते थे अर्थात् भ्रमण करते थे।

वह आर्य समाज के महान् व्यक्तित्व थे। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं ऋषिवर दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए कई जगहों पर आर्य समाज, गुरुकुल तथा गौशालाओं की स्थापना की। कई बार गौशालाओं के प्रधान पद एवं संरक्षक पद पर भी रहे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। वह आर्य समाज के स्तम्भ थे। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग एवं पवित्रता से परिपूर्ण था। उन्होंने अपने जीवन में हिम्मत कभी भी नहीं हारी। वह हमेशा सबसे कहा करते थे कि जो मनुष्य अपना कल्याण चाहता है। वह वेदों के सिद्धान्तों को अपने जीवन मं उतारकर उनपर चलने का प्रयास करे। वह जिस भी कार्य को करते थे। बड़ी सूझ-बूझ के साथ करते थे। वह जहां जाते थे वहां कहा करते थे कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। जो मनुष्य वेदों के पथ पर चलता है उसका कल्याण हो जाता है। जो मनुष्य वेद विरुद्ध आचरण करता है। वह मनुष्य नहीं बल्कि पशु माना जाता है। नीतिकार ने लिखा है-

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीले न गुर्णोधर्मः।
ते मर्त्यलोके भूविभारभूताः मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

अर्थात् जिस मनुष्य में न विद्या है न तप है, न ज्ञान है, न शील है, न गुण और न धर्म है। ऐसे मनुष्य इस मृत लोक पर भार रूप में हिरण के समान केवल विचरण कर रहे हैं। ये सभी गुण जिनमें होते हैं। वहीं मनुष्य होत हैं। शास्त्रों का कथन है कि मर्नुभवः अर्थात् हम मनुष्य बनें। लेकिन हम मनुष्य न बनकर पशु बन रहे हैं। हम पशुओं की तरह भोगों में फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। जबकि ऐसा नहीं करना चाहिए।

आचार्य जी का कहना था कि हम लोग ऋषि मुनियों के बताये हुये पद चिह्नों पर चलें। तभी हमारा कल्याण संभव है। वेदों के पथ पर चलते हुए प्रतिदिन सुबह शाम कम से कम दो तीन घण्टे ईश चिन्तन करता है। वह मनुष्य नहीं देवता माना जाता है। इन गुणों से युक्त आचार्य बलदेव जी थे। इसलिये वह मनुष्य नहीं देवता थे।

आचार्य बलदेव जी असाधारण प्रतिभा के व्यक्तित्व थे। उनका सम्पूर्ण जीवन त्यागमय था। आर्य समाज उनके लिये प्राण था। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। ऐसे महान् व्यक्तित्व संसार में कभी कभी आते हैं। वह वेदों, प्राचीन व्याकरण, महाभाष्य दर्शनों निरुक्त आदि अनेक शास्त्रों के अच्छे विद्वान थे। वह निर्भीकता के पुजारी थे। उन्होंने गौ रक्षा आन्दोलन में सरकार को भी झुका दिया। ऐसे महान विभूति को हम कभी नहीं भूल सकते।

वह बहुत निर्भीक थे। वह सत्य के लिए हमेशा अडिग रहते थे। सत्य की रक्षा के लिए हमेशा मर मिटने को तैयार रहते थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध आवाज उठाने वाले सतलोक आश्रम करौंथा रोहतक के कबीर पंथी महाराज रामपाल को धूल चटा दी। इससे सिद्ध होता है कि आचार्य जी बहुत निर्भीक थे। वास्तव में जो लोग आचार्य जी के मार्ग को अपनायेंगे उनका जीवन महान बन जायेगा।

उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी का अहित नहीं चाहा। सबकी भलाई की। सबका उपकार किया और रुपयों पैसों एवे अन्नों से गरीबों को मदद भी किया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश सेवा, आर्य समाज की सेवा, धर्म सेवा एवं परोपकार में लगा दिया। उन्होंने गौरक्षा आंदोलन, संस्कृत एवं संस्कृति बचाओ आन्दोलन भी किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने बाल विवाह छुआछूत एवं जाति प्रथा एवं स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया। बाल विवाह छुआछूत एवं जाति प्रथा को उन्होंने वेद-विरुद्ध बताया। आचार्य जी ने कहा कि स्त्रियों को भी वेद शास्त्र पढ़ने का अधिकार है, जैसाकि शास्त्रों में गार्गी जैसी विदुषी का प्रमाण भी मिलता है। आचार्य जी एक धर्मोद्धारक परोपकारी, न्यायप्रिय, सत्यवादी, स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त, समाज सेवी, राष्ट्र भक्त, धर्म भक्त एवं कर्मयोगी संत थे। ऐसे महा मानव को मेरा शत्-शत् प्रणाम है। लेखक कविता के माध्यम से प्रस्तुत करता है-

जब तक सूरज चांद रहेगा।
बलदेव जी का नाम रहेगा।।
उनको कभी नहीं भूलेंगे।
सारा जग उन्हें याद करेगा।।
वेदों के पथपर चलना।
उनका नित्य काम था।।
बलदेव जी का दुनियां में।
बहुत बड़ा नाम था।।
ज्ञान की गंगा दिल में बहाई।
वेदों की ज्योति जग में जलाई।।
श्री बलदेव जी ज्ञानी परोपकारी थे।
ब्रह्मचारी और सदाचारी थे।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे भक्त थे।
गौ भक्त राष्ट्रवादी और ईश भक्त थे।।
व्याकरण के सूर्य और विद्वान् थे।
समाज सुधारक और इन्सान थे।।
आचार्य बलदेव जी को मेरा प्रणाम है।
आज उनका भुवन में बड़ा नाम है।।
उन्होंने वेदों के पथ पर चलना सिखाया।
संध्या और हवन करना बताया।।

आचार्य बलदेव जी एक कर्मयोगी संत थे। कर्म करना ही मनुष्य का असली जीवन है। जो मनुष्य कर्म करने से डरता है। वह मनुष्य अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकता। वेद मंत्र स्पष्ट करता है-

कुर्वन्नवेह कर्माणि जिजीविशेषतं समाः
एवं त्वयि नान्यथे तोऽस्ति न कर्मलिष्यते नरे।।

यह मंत्र स्पष्ट करता है कि मनुष्य को शुभकर्म करता हुआ सौ वर्षो तक जीने की इच्छा रखनी चाहिए।जो मनुष्य अपने जीवन में शुभकर्म करता है। उसका परिणाम सदा शुभ ही होता है। कर्म करने वाला मनुष्य ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाता है। जो मनुष्य केवल भाग्य भरोसे रहता है और कर्म करना नहीं चाहता है। वह अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकता। ऐसे मनुष्य का जीवन हमेशा क्रन्दन करता रहता है। मनुष्य जीवन में कर्म ही सब कुछ है। कर्म करने वाला व्यक्ति ही आगे बढ़ता है। आचार्य बलदेव जी का भी यही कथन था कि हे मनुष्य। तुम केवल कर्म करो और फल की चिन्ता मत करो। जो मनुष्य जैसा कर्म करता है उसे परमात्मा वैसा ही फल देता है।

दिनांक 28 जनवरी 2016 ई. को दयानन्द मठ रोहतक में लगभग 6 बजे सुबह अकस्मात् उनकी मृत्यु हो गई। उनके निधन का समाचार सुनते ही सम्पूर्ण आर्य जगत स्तब्ध रह गया। आचार्य बलदेव जी के जाने से आर्यजगत को जो झटका लगा। अर्थात् आर्य जगत को जो क्षति हुई, उसकी पूर्ति होना असम्भव है। आचार्य जी ने आर्य समाज के हितार्थ जो कार्य किया। उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता ऐसे महान् आत्मा को मेरा शत्-शत् नमन है।

डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री ''सोम'',
लखीसराय

कोलकाता पुस्तक मेला में वैदिक साहित्य की धूम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में कोलकाता में 40वें पुस्तक मेले में आर्य समाज द्वारा भाग लिया गया। दिनांक 27 जनवरी से 7 फरवरी 2016 तक मेले में आर्य समाज द्वारा 30 वर्षों के पश्चात् भाग लिया गया। ज्ञात हो 3 वर्ष पूर्व प्रसिद्ध विद्वान स्व. उमाकांत जी उपाध्याय द्वारा पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य के माध्यम से वेद प्रचार करने की इच्छा जताई गयी थी। उनकी प्रेरणा से यह कार्य डॉ. विवेक आर्य जी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से सम्पन्न कराया। सहयोग के रूप में श्री राजेन्द्र जी दिल्ली से प्रचार हेतु साहित्य लेकर कोलकाता पहुंचे। श्री सुरेश कुमार अग्रवाल द्वारा सारी व्यवस्था उत्तम एवं सुचारु रूप से की गयी थी। मेले में हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला एवं उर्दू का साहित्य आर्य समाज द्वारा प्रदर्शित किया गया। मानव कल्याण के स्वर्णिम सूक्त का बंगला भाषा में अनुवाद कर वितरित किया गया। पुस्तक मेले में हिन्दी भाषी के साथ-साथ बंगला भाषी लोगों के लिए शंका समाधान हेतु श्री प्रणव भट्टाचार्य ने सेवा भाव से समय दिया। एक विशेष घटना इस मेले की उपयोगिता दर्शाती है। कुछ मुस्लिम विश्व हिन्दू परिषद के बुक स्टाल पर 'क्या वेदों में गोमांस भक्षण निषेध है?' का प्रमाण पूछने गये। स्वामी विवेकानंद और अन्य साहित्य का प्रदर्शन करने में लीन परिषद के सदस्य वेदों का नाम सुनते ही बगलें झांकने लगे। तभी किसी ने उन्हें आर्य समाज के स्टाल पर जाने के लिए बताया। आर्य समाज के अधिकारियों ने पं. उमाकांत जी द्वारा बंगला भाषा में मुद्रित 'वेदों में गोमांस निषेध' विषय पर ट्रैक्ट दिया। उस ट्रैक्ट को पढ़कर विहिप के अधिकारी मुसलमानों को उत्तर देनेके लायक हुए। इस घटना का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि आर्य समाज द्वारा एक बाद फिर से हिन्दू समाज के जागृत प्रहरी की भूमिका निभाई गयी।

इस मेले का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उसके भविष्य की प्रगति रहा-

1. आगामी वर्षों में आर्य समाज के स्टाल को बड़ा किया जायेगा। 2. बंगला भाषा में आर्य समाज के साहित्य को ज्यादा से ज्यादा प्रकाशित किया जायेगा। 3. बंगला भाषा में स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ जैसे सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि को सस्ते मूल्य पर उपलब्ध करवाया जायेगा। 4. बंगाल के सभी आर्य समाज मिलकर सहयोग करें। 5. बांग्लादेश के आर्यों को भी भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाये। 6. चारो वेदों का बंगला भाषा में अनुवाद किया जाये। 7. स्थानीय हिन्दुओं को मांसाहार, मद्यपान और जातिवाद आदि छोड़ने की प्रेरणा दी जाये। सभा पुस्तक मेले में सहयोग करने वाले सभी महानुभावों का धन्यवाद करती है। **-डॉ. विवेक आर्य**

पृष्ठ 1 का शेष धूमधाम से मनायें ...

6. इस अवसर पर मेले इत्यादि का आयोजन करना चाहिए, जिसमें महर्षि से संबंधित साहित्य का प्रचार-प्रसार करना चाहिए और सत्यार्थ प्रकाश नि:शुल्क वितरित करना चाहिए।
7. बच्चों को महर्षि से संबंधित कॉमिक्स व फिल्में दिखानी चाहिए।
8. गरीब समाज के लिए कोई न कोई सामाजिक व परोपकारी कार्य अवश्य करना चाहिए तथा उसका समाचार पत्रों के माध्यम से प्रचार करना चाहिए।
9. जिन व्यक्तियों ने पूरे वर्ष आर्य समाज की सेवा की हो, वैदिक साहित्य पर लेख लिखे हों एवं विद्वान, संन्यासियों का सम्मान करना चाहिए।
10. आर्य समाज के अतीत पर कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए।
11. संभव हो तो स्वामी जी के चित्र या लघु सत्यार्थ प्रकाश लोगों में नि:शुल्क वितरित करने चाहिए।
12. इस दिन स्वैच्छिक अवकाश आर्यजनों को लेना चाहिए।
13. इस अवसर पर शोभा यात्रा या प्रभात फेरी निकालनी चाहिए।
14. फेसबुक या व्ट्स-अप (सोशल मीडिया) के माध्यम से एक दूसरे को महर्षि के जन्मोत्सव की शुभकामनाएं देनी चाहिए।

आर्य समाज मंदिर दादों अलीगढ़ का 67वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मंदिर दादों अलीगढ़ उ. प. का 67वां वार्षिकोत्सव दिनांक 13-15 फरवरी 2016 को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस उत्सव में आर्य जगत के बड़े-बड़े विद्वान, आर्य संयासी तथा भजनों उपदेशक, अपने सार गर्वित उपदेश तथा भक्ति संगीत से आर्य जनता का मार्ग दर्शन व जीवनोपयोगी मार्ग दर्शन किया।

आर्य सन्देश यदि आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा है या आप आर्य सन्देश के लिए कोई सुझाव या शिकायत करना चाहते हैं तो हमारी ई-मेल आई डी. aryasandeshdelhi@gmail.com पर मेल करें। साथ ही आप अपनी ई-मेल आई डी. भी लिखकर भेजें जिससे आपके पास आर्य सन्देश मेल के जरिए भेजा जा सके। -सम्पादक

आप भी अपने शहर, जिले में प्रारम्भ करें 'घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ' योजना

इतिहास साक्षी है कि जितने भी महापुरुष हुए जिन्हें आज देवताओं के रूप में पूजा जाता है जैसे श्री राम, श्री कृष्ण उन सभी ने सिद्धि प्राप्ति हेतु महायज्ञ किये। यहां तक कि आदि शक्ति शिव के काल में भी पूजा-पाठ में यज्ञ ही प्रधान माने जाते थे ऋषियों-मुनियों के गुरुकुलों में प्रात: काल शिष्यों को गुरु द्वारा यज्ञ कराया जाता है। लेकिन समय परिवर्तन व पाखंडियों द्वारा यज्ञ परम्परा को शनै: शनै: दबाया जाने लगा। पूजा-पाठ यज्ञ आदि केवल पोंगा-पंडितों की बपौती बन कर रह गये, यज्ञ के नाम पर ठगी होने लगी। केवल आर्य समाज ने इस परम्परा को निरंतर कायम रखा और आज भी इस परम्परा को घर-घर पहुंचाने का बीड़ा उठाया हुआ है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों में एक ऐसी योजना चला रही है जिसके माध्यम से श्री सत्यप्रकाश शास्त्री जी घर-घर जाकर नि:शुल्क यज्ञ कराते हैं साथ ही यजमान को कुछ उपहार भी भेंट करते हैं। यज्ञ पर होने वाला समस्त व्यय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा स्वयं वहन करती है। क्यों न आप भी अपने जिले, राज्य, शहर में इस प्रकार की (घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ) योजना अपने आर्य समाज के माध्यम से प्रारम्भ करें और यज्ञ की परम्परा को आगे बढ़ाने में अपनी भागीदारी निभाएं। विस्तृत जानकारी के लिए श्री सत्य प्रकाश जी मो. 09650183335 पर सम्पर्क करें।

'दिल्ली के आर्य समाजों का इतिहास' ग्रन्थ प्रकाशन कार्य प्रगति की ओर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रकाशित होने वाले 'आर्य समाजों का इतिहास' ग्रन्थ का लेखन कार्य प्रगति पर है जिन आर्य समाजों ने अभी तक अपने समाज का इतिहास दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को नहीं भेजा है, वे शीघ्र अतिशीघ्र अपने समाज का इतिहास स्पष्ट अक्षरों में लिखकर 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर प्रेषित करें जिससे उन्हें भी इस ग्रन्थ में प्रकाशित किया जा सके। **-विनय आर्य, महामंत्री**

आप भी बनाएं वैदिक गीतों-भजनों को अपनी मोबाईल कॉलर ट्यून

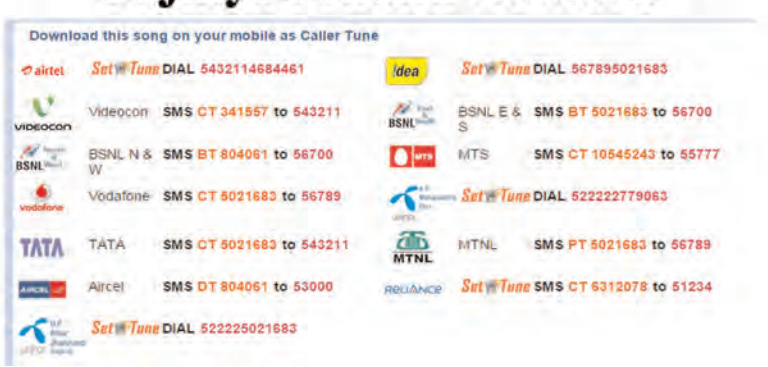

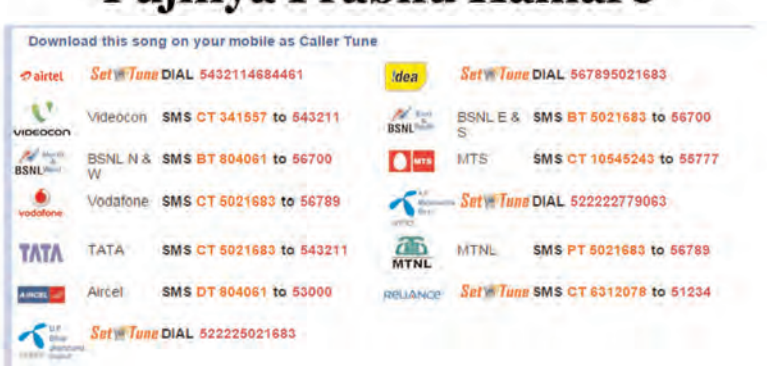

शादीखामपुर विद्यालय में बेबी एवं फैन्सी ड्रेस शो सम्पन्न

नई दिल्ली, महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल के तत्त्वावधान में शादीखामपुर विद्यालय में बसंत पंचमी के अवसर पर बेबी शो एवं फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण स्वामी श्रद्धानंद जी पर आधारित पात्रों का स्वामी जी द्वारा जामा मस्जिद और अकाल तख्त पर दिये उनके उद्बोधन को प्रस्तुत करना था। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती गुंजन चौहान (आई.आर.एस.) एवं डॉ. ज्योति थीं। कार्यक्रम का शुभारम्भ स्कूल के उपाध्यक्ष श्री अरुण प्रकाश वर्मा, प्रधान श्री कृपाल सिंह, कोषाध्यक्ष श्री जोगिन्द्र सिंह रोहिल्ला, आर्य समाज के प्रधान श्री भीमसेन कामरा, श्रीमती शकुंतला,श्रीमती तृप्ता और श्रीमती सुनीता बुग्गा, श्रीमती गीता कोचर ने दीप प्रज्वलित करके किया। विद्यालय प्रबंधक श्री कृपाल सिंह ने विद्यालय को उत्कृष्ट बनाने व कार्यक्रम को सफल बनाने पर अध्यापिकाओं, प्रधानाचार्या की प्रशंसा की और कहा कि ऋषि दयानन्द द्वारा दिये नारी शक्ति उत्थान के मंत्र के अनुरूप ही आज हमारे अतिथि, महिला अतिथि के रूप उपस्थित हुए हैं।

-प्रधानाचार्या

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी की झांकी को प्रथम पुरस्कार

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी के तत्त्वावधान में 31 जनवरी 2016 को भारत एकात्मता यात्रा का आयोजन किया गया था। इस शोभायात्रा में कुल 32 झांकियां थीं। आर्य समाज बाहरी रिंग रोड की झांकी मे हवन करते हुए श्रद्धालु माताएं व बहने उपस्थित थीं। यज्ञ ब्रह्मा का दायित्व आचार्य सत्य प्रकाश जी ने सम्भाला हुआ था। सभा की ओर से सर्वश्रेष्ठ झांकी के लिए एक निर्णायक मण्डल का गठन किया गया था। इस मण्डल के सदस्य रास्ते भर झांकियों का अवलोकन करते रहे तथा लोगों के विचार जानते रहे। निर्णायक मण्डल ने 'घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ' की थीम पर बनी झांकी को सर्वश्रेष्ठ झांकी घोषित किया। 7 फरवरी 2016 को आर्य समाज बाहरी रिंग रोड के खचाखच भरे हॉल में आयोजकों ने आर्य समाज बाहरी रिंग रोड को सर्वश्रेष्ठ झांकी के पुरस्कार स्वरूप एक ट्रॉफी भेंट की। यह ट्राफी आर्य समाज के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी ने अपने सहयोगियों के साथ प्राप्त की।

-सूर्यकांत मिश्र, प्रचार मंत्री

पृष्ठ 1 का शेष

क्या जे.एन.यू. में ...

संस्थान राजनीति में दखल देते हुए उग्रवाद के अड्डे बन गये। क्या भारत के तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दल भारत में अराजक तत्त्वों को स्वीकार करेंगे? यदि नहीं तो कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों को आज सरकार की कार्यवाही का विरोध नहीं करना चाहिए। सब जानते हैं आज वहां पढ़ रहे सभी छात्र आतंकी नहीं हैं; किन्तु उस सोर्स का तो पता चलना चाहिए जहाँ से उन्हें यह देश विरोधी नारे और मानसिकता मिल रही है? राहुल गाँधी का मोदी विरोध राजनैतिक दृष्टिकोण से जायज माना जा सकता है, किन्तु विरोधी तत्त्वों का खुलेआम समर्थन करना हर किस्म से नाजायज है। कांग्रेस और राहुल गाँधी को समझना होगा जब राहुल की दादी देश विरोधी तत्त्वों पर टैंक लेकर आतंकवाद को कुचलने के लिए किसी की आस्था पर भी हमला कर सकती है तो क्या आज भारत सरकार देश विरोधी तत्वों को गिरफ्तार भी नहीं कर सकती? कहीं आप राजनैतिक लालसा में भूलवश आतंक और राष्ट्र विरोधी मानसिकता का पक्ष तो नहीं ले रहे हैं? जरूरत उन लोगों की गिरफ्तारी के विरोध की नहीं थी, जरूरत इस बात की है कि धार्मिक स्थलों, शिक्षण संस्थानों की कड़ी से कड़ी सुरक्षा की जाए ताकि कोई उग्रवादी उनमें प्रवेश कर इनकी पवित्रता का हनन न कर पाए, सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छी शिक्षा और अनुभव के फलस्वरूप तैयार किए जाने वाले शिक्षण संस्थानों की बेहतर सुविधाएं मिलने से विद्यार्थियों के भविष्य की नींव मजबूत होती है जिससे कि वे अपने जीवन में सफलता की बुलन्दियों को छूने में कामयाब तो होते ही हैं, साथ में देश और समाज को भी उन्नत बनाने में सहयोग करते हैं। यदि सत्ता की लालसा में आज इन लोगों को बचाया गया तो कल देश के हालात मीडिल ईस्ट जैसे होने में देर नहीं लगेगी। जिस तरह कल गृहमंत्री जी ने आतंकी हाफिज सईद का नाम लिया। इसमें कोई संदेह नहीं करना चाहिए कि खालिस्तान की तरह जेएनयू में हुआ बवाल पाक प्रायोजित ना हो। क्योंकि इनकी गिरफ्तारी का विरोध पाकिस्तान, हाफिज समेत अलगाववादी नेता भी कर रहे हैं, साथ में कांग्रेस व अन्य विपक्ष भी कर रहे हैं तो इसमें इन लोगों को अपनी भूमिका स्पष्ट करनी चाहिए कि वे देश का विकास चाहने वाले नेता हैं या अलगाववादी विचार धारा के समर्थक हैं? आज सरकार को जेएनयू में कड़े कदम उठाने चाहिए और विपक्ष को इन छात्रों द्वारा किये गये कृत्य की कड़ी आलोचना करनी चाहिए। आज हमें ध्यान इस बात का रखना होगा कि कहीं केंद्र सरकार को कमजोर करने के चक्कर में हम देश की एकता व अखंडता को कमजोर तो नहीं कर रहे हैं?

-राजीव चौधरी

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

श्री सुरेश चन्द्र आर्य ब्लाक प्रमुख की प्रेरणा से मैं पाखण्ड के कीचड़ से बाहर निकला

मैं बाल किशन आर्य ग्राम गिड़हो जिला मथुरा उत्तर प्रदेश जोकि ब्रज मण्डल में पड़ता है वहां का रहने वाला हूं। मथुरा तो सर्वविदित है यह कृष्ण की नगरी कहलाती है। वहां पर पौराणिकता सर्वाधिक है। हर तरफ राधे-राधे का स्वर ही गूंजता है। पाखण्ड और अंधविश्वास चहुंओर छाया हुआ है। मैं अपने गांव में खेती करता था। एक दिन मेरे ही गांव के श्री सुरेश चन्द्र आर्य जो कि उस समय ब्लाक प्रमुख के साथ-साथ और गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता भी थे, ने मुझ से कहा, 'भाई बाल किशन कीचड़ में क्यों पड़े हो। तुम आर्य समाज कोसी कलां के सदस्य बन जाओ' उन्होंने आर्य समाज के विषय में और भी बहुत सी बातें बताई। मैं उनकी बातें सुनकर बड़ा प्रभावित हुआ। श्री सुरेश चन्द्र आर्य की प्रेरणा से में 4 किलोमीटर पैदल फिर 10 किलोमीटर बस से चल कर आर्य समाज कोसीकलां जाता और वहां सत्संग में शामिल होता। पूरे 3 वर्षो तक मैंने आर्य समाज कोसीकलां के साप्ताहिक सत्संग में भाग लिया। तब तक मेरे बेटे ने 5वीं कक्षा पास कर ली थी।

इसी बीच श्री सुरेश चन्द्र जी का एक दिन हृदयगति रुकने से अचानक देहान्त हो गया। सुरेश जी के देहान्त के बाद एक दिन उनकी पत्नी श्रीमती ऊषा देवी, जोकि रिश्ते में मेरी चाची लगती हैं ने मुझे व मेरे बेटे को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी की सेवा करने की सलाह दी। मैं अपनी चाची के आदेशानुसार गांव छोड़कर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में स्वामी स्वरूपानन्द जी से मिला और उनसे मिलने के बाद मुझे पता चला कि स्वामी जी भी मेरे ही गांव के निवासी थे। मैं स्वामी जी के सानिध्य में रहने लगा। मैंने 8 वर्षो तक स्वामी स्वरूपानन्द जी की पूरी भक्ति व श्रद्धा के साथ सेवा की। स्वामी जी ने मुझे हारमोनियम बजाना सिखाया, भजन गाना सिखाए और सारे वैदिक संस्कार सिखाए। 25 अप्रैल 2007 को स्वामी जी दिवंगत हो गये। स्वामी जी के दिवंगत होने के बाद से मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में रहते हुए अपनी सेवाएं नि:शुल्क अर्पित कर रहा हूँ। सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी का मुझ पर बड़ा स्नेह व प्यार है। आर्य समाज में आने से मेरा जीवन ही बदल गया, मुझे ऐसा प्रतीत होता कि मेरी उम्र 10 वर्ष बढ़ गयी है। मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं जहां आकर मैंने जीवन का एक नया रंग देखा जो जीवन के उद्देश्यों को सार्थक कर देता है।

-बाल किशन आर्य, भजनोपदेशक, दि. आ. प्र. सभा

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ -'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इसे निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा। **-संपादक**

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

-Priyavrata Das

Hymn to the Earth-1

The whole of the first hymn with 63 verses of Chapter XII of Atharva-veda is known as the hymn to the Earth (Prthivi Sukta). It describes Earth as our benefactress. Man from the dawn of Creation has his social and cultural roots grounded on the Earth with which he associates himself from his very birth. He gives honour and glory to the mountains and the lakes, the rivers and the forests amongst which he has grown up in life. The concept of 'Earth the mother' originally occuring in the Vedas, later reminded man of sentimental feeling towards the mother land. The first and the last verses of the hyman are stated below:

"Great truth, formidable righteousness, devotedness, perseverance, determination to be great and willingness to sacrifice one's individual interest for social good-these are the virtues of the people who sustain the Earth."

"O Mother Earth, do you kindly set me down well established, in concord with heaven; O sage, do you set me in fortune and prosperity."

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।। (Av.XII.1.1)

Satyam bruhadrtamugram diksha tapo brahma yajnah prthivim dharayanti.

sa no bhutasya bhavyasya patnyurum lokam prthivi nah krnotu..

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।

संविदाना दिवा कवे श्रियां मां धेहि भूत्याम्।। (Av.XII.1.63)

Bhume matarni dhehi ma bhadraya supratisthitam.

Samvidana diva kave sriyam mam dhehi bhutyam..

Hymn to the Earth-II

"On whom the ocean and the river, the waters and the lakes, on whom grains and food came into being, on whom appeared all that breathe, and the things that stir, let that Earth set us in first drinking."

"The all bearing, fast holding, firm standing, gold embedded reposer of moving things, bearing the Universal fire, let that Earth, whose master is the resplendent Lord assign us wealth?"

"What is your middle, O Earth and what is your navel, what refreshments arise out of your body, in them do you set us by purifying us? The Earth is the mother and I am her son. The cloud that drenches the Earth with rain is my father."

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।

सस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।। (Av.XII.1.3)

yasyam samudra uta sindhurapo yasyamannam krstayah sambabhubuh.

Yasyamidam jinvati pranadejatsa no bhumih purvapeye dadhatu..

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।

वैश्वांनरं बिभृती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु।। (Av.XII.1.6)

ता नः प्रजाः सं दुह्रतां समग्रा वाचो मधु पृथिवि धेहि मह्यम्।। (Av.XII.1.16)

Visvambhara vasudhani pratistha hiranyavakshya jagato nivesani.

Vaisvanaram bibhrati bhumiragnimindra rsabha dravino no dadhatu..

Ta nah prajah sam duhlatam samagra vaco madhu prthivi dhehi mahyam..

Hymn to the Earth-III

"Let the Earth, bearing in various places people of divergent speech, of diverse customs according to their localities, yield me a thousand streams of wealth as the cow yielding milk stands steady and unresisting while milching."

"Let the Earth, tranquil, fragrant, pleasant with sweet drink in her udder and rich in milk call unto us overflowing with milk as the cow calls to calf."

"O Mother Earth, do kindly set me down well established, in concord with the divine bliss. O preceptors, do show the path of prospetity."

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।

सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।।

(Av.xII.1.45)

Janam bibhrati bahudha vivacasam nanadharmanam prthivi yathaukasam.

sahasram dhara dravinasya me duham

dhruveva dhenuranapasphuranti..

शन्तिवा सुरभिः स्योना कीलालोध्नी पयस्वती।

भूमिरधि व्रवीतु में पृथिवी पयसा सह।।

(Av.xII.1.59)

Santiva surabhih syona kilaloghni payasvati.

bhumiradhi bravitu me prthivi payasa saha..

To Be Continue...

ग्रन्थ परिचय

पत्र एवं विज्ञापन

प्रश्न 1: महर्षि दयानन्द का अपने जीवन में अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों, यहां तक कि राजा-महाराजाओं के साथ भी सम्पर्क रहा। उनके साथ उनका पत्र-व्यवहार भी चलता रहता था। क्या इन पत्रों को प्रकाशित किया गया है?

उत्तर: यह सच है कि महर्षि ने अपने जीवनकाल में विभिन्न व्यक्तियों के साथ सहस्रों बार पत्र-व्यवहार किया होगा। इन पत्रों का संग्रह अनेक विद्वानों और महानुभावों ने किया तथा उनका प्रकाशन भी करवाया। पत्रों के साथ-साथ ऋषि द्वारा लिखे गये विज्ञापनों को भी छपवाया गया।

प्रश्न 2. किन-किन विद्वानों एवं महानुभावों ने इन पत्रों और विज्ञापनों का संग्रह किया था?

उत्तर: श्री पंडित लेखराम जी, श्री महात्मा मुन्शीराम जी, श्री पंडित भगवद्दत्त जी, श्री महाशय मामराज जी, श्री पं. चमूपति जी एम.ए. एवं डॉ. भवानी लाल भारतीय जी-इन सब महानुभावों एवं अनुसंधानकर्त्ताओं ने इन सब पत्रों और विज्ञापनों का संग्रह किया और उनका प्रकाशन भी करवाया।

प्रश्न 3. इन सब विद्वानों ने इन पत्रों, आदि का प्रकाशन कब और किस रूप में करवाया?

उत्तर: इन सब विद्वानों द्वारा करवाये गये प्रकाशनों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है:-

1) श्री पंडित लेखराम जी: इन्होंने ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा उनके प्रति लिखे गये पत्रों और विज्ञापनों के संग्रह के लिए प्राय: समस्त उत्तर भारत में भ्रमण किया था। इन्होंने इनका प्रकाशन उर्दू भाषा में लिखे गये महर्षि के जीवनचरित में किया है। बाद में, सं. 2028 (सन् 1971) में, इस ग्रन्थ का हिन्दी भाषा में भी अनुवाद प्रकाशित हुआ। इस जीवनचरित में संगृहीत इन पत्रों और दस्तावेजों की सहायता के बिना कोई भी नया लेखक महर्षि के जीवनचरित का यथार्थ उल्लेख नहीं कर सकता।

2.) श्री महात्मा मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) : इन्होंने भी पं. लेखराम की तरह दोनों प्रकार के पत्रों का संग्रह करके, उनमें से कुछ को पहले 'सद्धर्म प्रचारक' के संग्रह करके, उनमें से कुछ को पहले 'सद्धर्म प्रचारक' के संवत् 1966 में ही 'ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार' (प्रथम भाग) नामक पुस्तक में प्रकाशित किया। इसमें अधिकतर ऋषि को भेजे गये दूसरे व्यक्तियों द्वारा लिखे गये पत्र हैं, जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। भूमिका से ज्ञात होता है कि वे दूसरा भाग भी छपवाना चाहते थे, परन्तु छपवा न सके।

3.) श्री पं. भगवद्दत्त जी: इन्होंने संवत् 1975, 1976, 1983 और 1984 में क्रमश: चार भागों में ऋषि द्वारा स्वलिखित 246 पत्रों और विज्ञापनों को प्रकाशित किया। इसके बाद भी वे इनके संग्रह और अनुसंधान में लगे रहे और संवत् 2002 तक उन्होंने लगभग 500 पत्रों और विज्ञापनों को एकत्र कर लिया। इस संग्रह को क्रम पूर्वक सम्पादित करके सं. 2002 में 'रामलाल कपूर ट्रस्ट, लाहौर' द्वारा 20 गुणा 30 अठपेजी आकार की 550 पृष्ठों में छपवाकर प्रकाशित किया गया था।

4.) श्री महाशय मामराज जी: ऋषि दयानन्द के इस अनन्य दीवाने भक्त के अथक परिश्रम और सहयोग से ही पं. भगवद्दत्त जी उपरिलिखित संग्रह और प्रकाशन कर पाये थे।

5.) श्री पं. चमूपति जी एम.ए.: इन्होंने ठाकुर किशोरी सिंह जी से ऋषि दयानन्द के पत्र-व्यवहार का अमूल्य संग्रह प्राप्त किया था, जिसमें लगभग 172 पत्र थे। ये पत्र महर्षि के अंतिम समय के थे, जो राजस्थान के विशिष्ट व्यक्तियों से सम्बद्ध हैं, अत: अति महत्वपूर्ण हैं।

6.) श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक: ऊपर लिखित पं. भगवद्दत्त जी द्वारा संगृहीत और रामलाल कपूर ट्रस्ट लाहौर द्वारा 2002 में प्रकाशित संग्रह सन् 1947 में देश विभाजन के समय जला दिया गया था। भाग्यवश, इसकी कुछ प्रतियां सुरक्षित रहीं। सन् 1953 के अन्त में इनके पुन: प्रकाशन व सम्पादन की जिम्मेवारी पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने ग्रहण की। उनके परिश्रम के फलस्वरूप सन् 1955 में 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। इसमें पत्रों की संख्या 500 से बढ़कर 680 हो गई थी। मीमांसक जी ने इन पत्रों से सम्बद्ध अनेक परिशिष्ट व टिप्पणियां भी लिखी थीं, जो ग्रन्थ के बड़े आकार के कारण उसमें न छप सकी थीं। बाद में, वेदवाणी में क्रमश: छापे गये थे। इस द्वितीय संस्करण के बाद, तृतीय संस्करण छापा गया, जो एक बृहत् संस्करण था। यह चार भागों में प्रकाशित हुआ। पहले (सन् 1980 में प्रकाशित) और दूसरे भाग (सन् 1981) में 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' हैं तथा तीसरे (सन् 1982) और चौथे भाग (सन् 1983) में 'ऋषि दयानन्द के प्रति लिखे गये' पत्र और विज्ञापन हैं।

प्रश्न 4: जबकि ऋषि दयानन्द के अन्य विद्यमान हैं, तो इन पत्रों और विज्ञापनों के संग्रह एवं प्रकाशन के लिए इतना अधिक परिश्रम क्यों किया गया?

उत्तर: किसी भी महापुरुष के जीवन, उसकी विचारधारा एवं महत्ता को जानने के लिए ग्रन्थों से अधिक उसके द्वारा लिखे गये पत्रों का महत्व एवं उपयोग होता है। ये पत्रादि अलग-अलग व्यक्तियों, परिस्थतियों, समस्याओं एवं क्रियाकलापों से सम्बद्ध होते हैं, जिनमें व्यक्ति अपने विचारों, चिन्तन, समाधानों आदि का प्रकटीकरण बहुत ही स्पष्ट और सरल रूप से करता है। इस प्रकार का स्पष्टीकरण उसी लेखक के अपने ग्रन्थों में भी नहीं हो सकता। अत: पत्रों का महत्त्व ग्रन्थों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द के पत्र-व्यवहार को पढ़कर हमें ऐसे महत्त्वपूर्ण विषयों और घटनाओं का ज्ञान होता है, जिनके बारे में उनके द्वारा रचित ग्रन्थों और उनके जीवनचरितों से कुछ भी ज्ञात नहीं होता।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।
-मो. 09540040339

महान देशभक्त पं. सोहन लाल पाठक से युवा प्रेरणा लें

'महान स्वतन्त्रता सेनानी व शिक्षाविद पं. सोहनलाल पाठक ने सिंगापुर व बर्मा में भारत की आजादी के लिए कड़ा संघर्ष किया। सौ वर्ष पूर्व 10 फरवरी 1916 को उन्होंने मुस्तफा हुसैन व अमर सिंह के साथ फांसी का फंदा चूमकर राष्ट्र-हित में बलिदान दिया।' ये उद्‌गार वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लव की सूत्रधार व पंजाब केसरी की डायरेक्टर श्रीमती किरण चोपड़ा ने आर्य वीरांगना दल, दिल्ली व अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ पंजाबी बाग के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित क्रांतिवीर पं. सोहन लाल पाठक शहीद शताब्दी समारोह वजीरपुर, नई दिल्ली में कहे।

वैदिक विद्वान आचार्य विजय भूषण आर्य, पं. देव शर्मा वेदालंकार ने आर्य समाज के रचनात्मक कार्यो व आदर्शो पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर 'महान देशभक्त वीर' का लोकार्पण हुआ। प्रदेश आर्य केन्द्रीय सभा व भा.ज.पा. दिल्ली कार्यकर्ताओं ने आर्य समाज मन्दिर डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी को दूसरा स्थान उपलब्ध कराने में समाज सेविका श्रीमती किरण चोपड़ा का शाल व स्मृति चिह्न देकर अभिनन्द किया गया। **-चन्द्र मोहन आर्य**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अयोध्या में पूर्वान्चल आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. एवं गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पूर्वान्चल आर्य महासम्मेलन गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या में दिनांक 6 व 7 फरवरी 2016 को योग-प्राणायाम, यज्ञ, भजन-प्रवचन एवं ध्वजारोहण के साथ सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी की अध्यक्षता एवं श्री नागेन्द्र कुमार शास्त्री प्राचार्य गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या एवं विमल किशोर आर्य के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन योग-प्राणायाम डॉ. हरी सिंह एवं डॉ. विनोद कुमार योगाचार्य द्वारा सम्पन्न कराया गया। यज्ञ ब्रह्मा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती थे। श्री देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ द्वारा ओम् ध्वजारोहण कर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा ध्वज गीत गाया गया। मा. श्री माता प्रसाद पाण्डेय अध्यक्ष विधान सभा उ.प्र लखनऊ ने दीप प्रज्वलित कर वेद सम्मेलन का शुभारम्भ किया।

-विमल किशोर आर्य, संयोजक

प्रो. डॉ. अभिमन्यु कुमार व आचार्य विद्या प्रसाद का सार्वजनिक अभिनन्दन

30 जनवरी 2016 स्वतन्त्रता सेनानी एवं महाशय मनफूल सिंह आर्य स्मारक समिति पलवल के तत्त्वावधान में 27वें प्रेरणा सभा का आयोजन राष्ट्रीय निर्माण पार्टी के प्रधान ठाकुर विक्रम सिंह की अध्यक्षता में किया गया, समारोह के मुख्य अतिथि सांसद एवं मुम्बई पुलिस के पूर्व आयुक्त डॉ सत्पाल सिंह थे। समारोह में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान दिल्ली के निदेशक डॉ. अभिनन्यु कुमार और आर्य समाज के चिन्तक आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।-**धर्म प्रकाश आर्य, प्रधान**

बोध कथा 'वली' देखने को भी इन्सां नहीं है!

एक था फकीर! दिन के समय हाथों में दो मशालें लेकर बाजार में चला जाता था। एक-एक दुकान के सामने ठहरता। ठहरने के पश्चात् चल पड़ता। एक व्यक्ति ने पूछा-''बाबा! तुम यह दिन के समय मशालें लेकर क्या देखते-फिरते हो? क्या ढूंढते हो?''

फकीर ने कहा-''बच्चा! मैं मनुष्य खोज रहा हूं।''

उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा-''इतनी भीड़ में, इतने लोगों में तुम्हें कोई मनुष्य नहीं मिला?''

फकीर बोला- ''नहीं बच्चे! मुझे कोई नहीं मिला।''

पूछने वाले ने कहा-''तुम मनुष्य किसे कहते हो?''

फकीर ने उत्तर दिया- ''जिसमें काम की वासना और क्रोध की आग नहीं, जो इन्द्रियों का दास नहीं और क्रोध के वश में होकर अपने लिए और दूसरों के लिए आग की लपटें उभारने का यत्न नहीं करता, उसको मैं मनुष्य कहता हूं।''

भरी मरदमों से गो यह सरजमीं है।
'वली' देखने को भी इनसां नहीं है!

साभार : बोध कथाएं

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

महान सन्त 'आचार्य बलदेव महाराज'

आचार्य बलदेव जी, सार्वदेशिक प्रधान। ईश भक्त धर्मात्मा, थे सच्चे इंसान।।
ये सच्चे इंसान, वेद मर्यादा पालक। स्वामी ओमानन्द, गुरु थे उनके लायक।।
देश भक्त, गुणवान, धर्म के थे अनुरागी। परोपकारी सन्त, सत्यवादी थे त्यागी।।2।।
खोला गुरुकुल कालवा, किया धर्म का काम। देव पुरुष ने कर दिया, सकल विश्व में नाम।।
सकल विश्व में नाम, हजारों बाल पढ़ाए। देश भक्त विद्वान, सैकड़ों शिल्प बनाए।।
राज सिंह और धर्मवीर को, ज्ञान सिखाया। रामदेव को सकल विश्व में है चमकाया।।2।।
दर्शनाचार्य थे बड़े, थे गो भक्त महान। आर्य जगत में सब जगह, उनका था सम्मान।।
उनका था सम्मान, कर्म अच्छे करने थे। मानवताओं के पुंज, पराया दुख हरते थे।।
हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में, काम किया था। तारा सिंह, प्रताप सिंह को, हरा दिया था।।3।।
आचार्य प्रवर गए, छोड़ सकल संसार। मौन अचम्भा है बड़ा, मित्रो! करो विचार।।
मित्रो! करो विचार, जगत में जो जन आता। राजा हो या रंक, काल सबको खा जाता।।
राम, कृष्ण, चाणक्य, न यम से बचने पाए। अर्जुन, पृथ्वीराज, काल ने ग्रास बनाए।।4।।
सुनो आर्यो! ध्यान से, एक काम की बात। आपस में तुम मत करो, मित्रो! घूंसे-लात।।
मित्रो! घूंसे-लात, करोगे पछताओगे। कहता हूं मैं साफ, एक दिन मिट जाओगे।।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द की, शिक्षा मानो। अहंकार दो त्याग, धर्म अपना अब जानो।।5।।

-पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य 'पत्रकार', पलवल

संस्कृतम्

विद्याविहीनः पशुः। (विद्या)

विद्याविहीनः पशुः। (विद्या)
ज्ञानार्थकविद्धातोः विद्याशब्दः सिध्यति। यस्य कस्यचिदपि वस्तुनः सम्यक्तया ज्ञानं विद्येति कथ्यते। वेददर्शनसाहित्यविज्ञानादीनां विषयाणां पठनं सम्यग् ज्ञानं च विद्येति अभिधीयते।
यद्यपि संसारे बहूनि वस्तूनि सन्ति, परंतु विद्यैव सर्वश्रेष्ठं धनमस्ति। अत एवोच्यते- 'विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्'। विद्यया मनुष्यः स्वकीयं कर्तव्यं जानाति। विद्ययैव मनुष्यो जानाति यत् को धर्मः, कोऽधर्मः, किं कर्तव्यम्, किम् अकर्तव्यम्, किं पुण्यम्, किं पापम्, किं कृत्वा लाभो भविष्यति, केन कार्येण वा हानिः भविष्यति। स विद्याप्राप्त्या सन्मार्गम् अनुवर्तितुं प्रयतते। एवं विद्ययैव मनुष्यो मनुष्योऽस्ति। यो मनुष्यो विद्याहीनोऽस्ति स कर्तव्याकर्तव्यस्य अज्ञानात् पशुवद् आचरति, अतः स पशुरित्यभिधीयते। 'विद्याविहीनः पशुः' इति।
विद्या सर्वेषु धनेषु श्रेष्ठमस्ति, यतो हि विद्यैव व्यये कृते वर्धते। अन्यद् धनं व्यये कृते क्षयं प्राप्नोति। अत एवोक्तम्-
अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्।।1।।
न चोरहार्यं न च भ्रातृभाज्यं, न राजहार्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।2।।
विद्यैव जगति मनुष्यस्य उन्नति करोति। दुःखेषु विपत्तिषु च तस्य रक्षां करोति। विद्यैव कीर्तिं धनं च ददाति। विद्या वस्तुतः कपलता विद्यते।
मातेव रक्षति पितेव हिते नियुडक्ते, कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं, किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।3।।
विद्ययैव मनुष्यः सर्वत्र संमानं प्राप्नोति। राजानोऽपि तस्य पुरस्तात् नतशिरसो भवन्ति। विद्वांस एव संसारस्य दुःखानि दूरीकुर्वन्ति। त एव उपदेशका विचारका ऋषयो महर्षयो मंत्रिणो नेतारश्च भवन्ति। विद्वांस एव विविधान् आविष्कारान् कृत्वा संसारस्य श्रियं वर्धयन्ति, लोकान् च सुखिनः कुर्वन्ति। अतः सर्वैरपि आलस्यप्रमादादिकं त्यक्त्वा विद्याध्ययनम् अवश्यं कर्तव्यम्। विद्ययैव मोक्षप्राप्तिः भवति। उक्तं च- 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

15 फरवरी 2016 से 21 फरवरी, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18 फरवरी 2016/ 19 फरवरी, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 फरवरी, 2016

आर्य सन्देश के सम्मानीय सदस्यों से निवेदन

आर्य सन्देश के समस्त सम्मानीय सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य सन्देश अपने समस्त सदस्यों का डाटा अपडेट कर रहा है। अत: आप अपना मोबाईल नम्बर एवं ईमेल पता, सदस्य संख्या के साथ शीघ्र अतिशीघ्र भेजने की कृपा करें जिससे आपका नाम रिकार्ड में अपडेट किया जा सके। -सम्पादक

सदस्यता शुल्क भेजें

आर्य सन्देश के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क भी तत्काल भिजवाने की कृपा करें जिससे उनको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त होता रहे। शुल्क संबंधी जानकारी के लिए व्यवस्थापक श्री एस.पी. सिंह (9540040324) अथवा श्री जियालाल (9650183336) से संपर्क करें। -सम्पादक

प्रतिष्ठा में,

महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन प्रगति पथ पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। आप सभी से निवेदन है कि यदि आपके पास महाशय धर्मपाल जी से सम्बन्धित कोई लेख/सूचना/स्मृति चित्र/कविता/संस्मरण/पत्र व्यवहार या आपके यहां उनके नाम से लगा कोई शिलालेख आदि हो तो कृपया 'महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर तत्काल प्रेषित करने की कृपा करें जिससे आपके द्वारा प्रेषित सामग्री को ग्रन्थ में स्थान दिया जा सके। आप अपनी प्रकाशन सामग्री समिति को aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भी कर सकते हैं।

-सचिव, महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर जम्मू में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2016 जम्मू शहर में दिनांक 5 से 12 जून 2016 तक लगाया जाएगा। इसमें भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की वे वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम से कम दो शिविरों में भाग लिया हो, आ सकती हैं। भाग लेने वाली वीरांगनाएं 15 मई 2016 तक अपने नाम साध्वी डॉ. उत्तमायति प्रधान संचालिका मो. 09672286863 व श्रीमती मृदुला चौहान संचालिका मो. 09810702760 पर रजिस्टर करवा दें।

-आरती खुराना, सचिव, मो. 09910234595

शुद्ध तांबे से निर्मित वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-

वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

पाठको से अनुरोध

आर्य सन्देश के पाठकों से अनुरोध है कि वे आर्य सन्देश सदस्यता शुल्क का चैक 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' की बजाए 'आर्य सन्देश' के नाम से ही प्रेषित करें।

-सम्पादक

आवश्यकता है

आर्य समाज रोहतास नगर को धर्माचार्य/पुरोहित की पूर्ण कालिक के लिए आवश्यकता है। मासिक वेतन योग्यतानुसार ही दिया जाएगा। अत: पूर्ण कालिक समय देने वाले ही आवेदन करें। -प्रधान(9873907051)

वैन बिकाऊ है

मॉडल 2004 सीएनजी फिटेड

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रचार वाहन मारुति वैन 2004 मॉडल, सीएनजी बिकाऊ है। खरीदने के इच्छुक सम्पर्क करें।

- एस.पी. सिंह (9540040324)

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह